2 सितम्बर 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

स्वयं में सिमटना ही सबसे बड़ा कार्य है, मिथ्यात्व के नाश का एक मात्र उपाय है।

ह्न गागर में सागर, पृष्ठ-35

वर्ष : 30, अंक : 11 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (प्रथम), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 16 सितम्बर 07 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग एक माह का समय शेष है, तथापि दिनांक 27 अगस्त 07 तक हमारे पास 532 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 28 अगस्त 07 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक 517 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 225 स्थानों पर तो श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक एवं वर्तमान छात्र विद्वान ही प्रभावनार्थ जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वानों मेंह्न 1.**कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, 2.**मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, 3.**जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, 4.**पुणे (चिंचवड) :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर, 5.**मोडनिंब :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, 6.**अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, 7.**छिन्दवाड़ा :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 8.**दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, 9.**पीसांगन :** ब्र.अभिनंदनकुमारजी शास्त्री खनियाँधाना, 10.**मुम्बई(दादर) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, 11.**फिरोजाबाद :** ब्र. सुमतप्रकाशजीजैन खनियाँधाना, 12.**भिण्ड (देवनगर) :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा, 13. **इन्दौर (शक्कर बाजार) :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, 14.**उज्जैन :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल 15.**अशोकनगर :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, 16.**जबलपुर :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, 17. **भोपाल (चौक) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 18.**अजमेर :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, 19.**मुजफ्फरनगर :** पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, 20.**सासनी :** पण्डित अशोककुमारजी लुहाडिया मंगलायतन, 21. **कोलकाता (पद्दोपुकुर) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर।

विदेश मेंह्न 1.**नैरोबी :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, 2-3.**वाशिंग्टन(अमेरिका) :** पण्डित दिनेशभाई एवं डॉ. उज्ज्वला शाह मुम्बई, 4.**लंदन :** पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, 5.**शिकागो :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट 6.**ह्यूस्टन (अमेरिका) :** पण्डित विपिनजीशास्त्री।

मध्यप्रदेश प्रान्तह्न 1. **भिण्ड (परमागम)** : ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ललितपुर, 2. **इन्दौर (साधनानगर)** : डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, 3. **इन्दौर (गांधीनगर)** : पं. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, 4.**इन्दौर (रामचन्द्र नगर)** : पं. अनिलजी जैन इन्जि. भोपाल, 5. **इन्दौर (माणक चौक)** : पं. सतीशजी कासलीवाल इन्दौर, 6.**इन्दौर (न्यू पलासिया)** : पं. अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, 7. **इन्दौर (नन्दानगर)** : पं. केशवरावजी जैन नागपुर, 8.**भोपाल (कोहेफिजा)** : पं. महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड, 9. **भोपाल (अशोका गंज)** : पं. आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा, 10. **निसई** : पं. कपूरचन्दजी समैया सागर, 11. **विजयपुर** : पं. नेमीचन्दजी ग्वालियर, 12.**बनखेडी :** पं. सौरभजी गढाकोटा, 13.**बडगाँव** : पं. सुरेशजी सर्राफ ललितपुर, 14. **भोपाल (पंचशील नगर)** : ब्र.सुधाबेनजी छिन्दवाड़ा, 15. **ग्वालियर (फालका बा.)** : पं.प्रद्युम्नजी जैन मुजफ्फर नगर, 16.**ग्वालियर(ठाटीपुर)** : पं. महेशजी जैन, 17.**ग्वालियर (दानाओली)** : पं. विकासजी शास्त्री खनियांधाना, 18.**ग्वालियर (लश्कर)** : पं. अनुराजजी शास्त्री फिरोजाबाद, 19.**ग्वालियर(सोड़ा का कुआँ)** : ब्र. विमलाबेनजी जैन सागर, 20-21.**विदिशा (किला अन्दर)** : पं. अमितजी मोदी एवं पं. एकत्वजी जैन खनियांधाना, 22.**विदिशा (स्टेशन)** : पं. पदमकुमारजी अजमेरा रतलाम, 23. **रांझी (जबलपुर)** : पं. तपिशजी जैन उदयपुर, 24. **बीना** : पं. अशोकजी जैन सिरसागंज, 25. **सागर (मुमुक्षु मण्डल)** : पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 26.**सागर (मकरोनिया)** : पं. विनोदजी जैन गुना, 27. **रतलाम (चांदनी चौक)** : पं. कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, 28. **रतलाम (स्टेशन)** : पं. विमलचन्दजी जैन लाखेरी, 29. **दुर्ग** : पं. पन्नालालजी खैरागढ, 30.**मन्दसौर (कालाखेत)** : पं. संजयजी शाह अरथूना, 31. **खनियांधाना** : पं. सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन, 32-33. **शहडोल** : पं. फूलचन्दजी मुक्कीरवार एवं विदुषी मंजूषाजी मुक्कीरवार हिंगोली, 34. **गुना (मुमुक्षु म.)** : पं. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, 35-36. **खुरई** : विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी उज्जैन एवं विदुषी पुष्पाजी झांझरी उज्जैन, 37.

बड़नगर : पं. देवेन्द्रजी जैन सिंगोडी, 38. **शहपुरा भिटोनी** : पं. सुनीलजी जैन इन्जि. सागर, 39. **छिन्दवाड़ा** : विदुषी समताजी झांझरी उज्जैन, 40. **महिदपुर** : पं. शांतिलालजी सौगानी, 41. **अम्बाह** : पं. शांतिलालजी काला भिण्ड, 42. **अकाझिरी** : पं. विनयजी पटवारी खनियांधाना, 43.**मौ** : पं. मिश्रीलालजी जैन खनियांधाना, 44.**आरोन** : पं. नितुलकुमारजी जैन भिण्ड, 45. **टीकमगढ़** : ब्र. कल्पनाबेनजी जैन जयपुर, 46. **कोलारस** : पं. सुरेशचन्दजी जैन इन्जि. भोपाल, 47. **छिन्दवाड़ा** : पं. ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, 48.**बेगमगंज** : पं. चेतनजी बकस्वाहा, 49. **गौरझामर** : पं. सुनीलकुमारजी शास्त्री शिवपुरी, 50. **नागदामण्डी** : पं. सरदारमलजी जैन बेरसिया, 51.**मंडला** : पं. अरूणजी लालोनी अशोकनगर, 52. **धामनोद :** पं. हुकमचन्दजी राघौगढ, 53. **रन्नौद** : पं. सुनीलजी जैन देवरी, 54. **सनावद** : पं. विकासजी शास्त्री मौ, 55. **खुरई (विधान)** : पं. विनोदजी शास्त्री बांसवाड़ा, 56.**सिलवानी** : पं. मनोजजी शास्त्री अभाना, 57. **पचमढी** : पं. सौरभ जैन खडैरी, 58. **शाहगढ** : पं. संजयकुमारजी इन्जि. खनियांधाना, 59. **मन्दसौर (नरसिंहपुरा)** : पं. पंकजजी जैन खडैरी, 60. **पटेरा** : पं. भानुकुमारजी शास्त्री खडैरी, 61. **गुना (महावीर जिनालय)** : पं. अनिलजी शास्त्री गुना, 62. **शुजालपुर मण्डी** : डॉ. भरतजी उज्जैन, 63. **चिचोली** : पं. रूपेशजी जैन मुंबई, 64. **शाहपुर** : पं. विनोदजी मोदी दलपतपुर, 65. **होशंगाबाद** : पं. अभिषेकजी मंगलायतन, 66. **सोनागिरी** : पं. लालजीराम जैन विदिशा, 67. **बावडीखेडा** : पं. आशीषजी अमायन, 68. **बंडा बेलई** : पं. तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, 69–70. **जावरा** : पं. अशोकजी उज्जैन एवं दीपेशजी जैन ग्वालियर, 71. **कुचडौद** : पं. कैलाशचन्दजी जैन बुढेरा, 72. **गुना (कैन्ट)** : पं. विजयकुमारजी अशोकनगर, 73.**जावर** : पं. विपीनजी जैन, इन्दौर (सी.ए.), 74. **खरगौन** : पं. शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री मौ, 75. **गढ़ाकोटा** : पं. सुरेन्द्रजी सागर, 76. **ऊन पावागिरि** : श्रीमती आशाजी जैन मलकापुर, 77. **मगरौन** : पं. शीतलजी शास्त्री नौगाँव, 78. **नरवर** : पं. राजकुमारजी जैन अशोकनगर, 79. **करेरा** : पं. सन्तोषजी वैद खनियांधाना, 80. **बड़ामलहरा** : पं. रविकुमारजी ललितपुर, 81. **गोरमी** : पं. अनिलजी अमायन, 82. **अमायन** : पं. अजीतजी मड़ावरा, 83. **रहली** : पं. अमोलजी शास्त्री बांसवाड़ा, 84. **करैया (ग्वालियर)** : पं. तन्मयजी खनियांधाना, 85.**जबेरा :** पं. पुष्पाजी खण्डवा, 86.**केसली** : पं. कैलाशचन्दजी ग्वालियर, 87.**खडैरी** : पं. प्रवीणजी जयपुर, 88. **शिवपुरी** : पं. ज्ञानचन्दजी टीकमगढ, 89. **दलपतपुर** : पं. कैलाशचन्दजी इन्दौर, 90. **लुकवासा** : पं. सुकुमालजी शास्त्री, 91. **आरोन (विधान)** : पं. दिपेशजी अमरमऊ , 92.**लुहारदा** : पं. छगनलालजी जैन, 93.**महिदपुर** : पं. अरूणजी जैन टीकमगढ़, 94. **सागर (तारण–तरण)** : पं. सुरेन्द्रजी'पंकज' खनियांधाना, 95. **हरदा** : श्रीमती कुसुमलताजी जैन, 96.**अशोकनगर :** कु. परिणति पाटील जयपुर, 97.**अमलाई :** पं. सजलजी शास्त्री, 98.**सिरोंज :** पं. विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा, 99.**शुजालपुर शहर** : पं. नितीनजी शास्त्री खड़ैरी, 100.**गोहद:** पं.उमरेशजी सिंघई भोपाल, 101.**अमरमऊ**: पं.अजयजी शास्त्री पीसांगज, 102.**बहोड़ापुरा (ग्वालियर)**: पं.विवेकजी शास्त्री सागर, 103.**ग्वालियर (सोड़ा का कुआ)**: पं.अक्षयजी शास्त्री पिड़ावा

महाराष्ट्र प्रान्तह्न 1. **मुम्बई (मलाड)** : पं. शैलेषभाई शाह तलोद, 2. **मुम्बई (घाटकोपर)** : पं. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, 3. **मुम्बई (बोरिवली)** : पं. अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, 4. **मुम्बई (सीमन्धर)** : पं. विपीनजी शास्त्री श्योपुर, 5. **मुम्बई (अन्धेरी–ईस्ट)** : श्रीमती अल्पनाजी भारिल्ल मुम्बई, 6. **मुम्बई (दहिसर)** : पं. सौरभजी शास्त्री मुंबई, 7.**मुम्बई (डोम्बिवली)** : पं. सचिनजी शास्त्री जबेरा, 8. **मुम्बई (भायन्दर–वेस्ट)** : पं. संजयजी शास्त्री मंगलायतन, 9.**मुम्बई (कान्दीवली–ईस्ट)** : श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, 10. **मुम्बई (मीरा रोड)** : पं. अजीतकुमारजी जैन फिरोजाबाद, 11. **मुम्बई (एवरशाईन)** : पं. राहुलजी अलवर, 12. **मुम्बई (भांडुप)** : पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, 13. **मुम्बई** : पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, 14. **मुम्बई** : पं. जागेशजी शास्त्री जबेरा, 15. **सोलापुर (बुवने मन्दिर)** : पं. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथ, 16. **औरंगाबाद (सिडको) :** पं. शीतलजी शेट्टी शिरोल, 17. **मलकापुर** : पं. सुनीलजी धवल भोपाल, 18. **नागपुर (नेहरु पुतला)** : विदुषी राजकुमारीजी जैन जयपुर, 19. **देवलाली** : पं. सुरेशजी जैन टीकमगढ, 20. **गजपंथ सिद्धक्षेत्र** : ब्र. जिनेन्द्रजी जैन जबलपुर, 21. **हिंगोली** : पं. स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, 22. **पुणे (जैन बोर्डिंग)** : पं. प्रकाशदादाजी झांझरी उज्जैन, 23. **अक्कलकोट** : पं. कमलेशजी मौ, 24. **जलगाँव** : पं. नयनजी शाह सिकन्दराबाद, 25. **पंढरपुर** : पं. सचिनजी जैन खनियांधाना, 26. **सेलू** : पं. अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, 27. **चिखली** : पं. शैलेन्द्रजी जैन मूंगेर, 28. **नातेपुते** : पं. पद्माकरजी जैन हिंगोली, 29. **कारंजा (लाड)** : पं. कस्तुरचन्दजी जैन भोपाल, 30. **वाशिम (मुमुक्षु मण्डल)** : पं. ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, 31. **विहिगाँव** : पं. आतिशजी जोगी औरंगाबाद, 32. **डोणगाँव** : पं. चंदनमलजी शाह नातेपुते, 33. **औरंगाबाद (स्वा. भ.)** : श्रीमती लताजी रोम अकोला, 34.**शिवापुर** : पं. राजूजी काले रिठद, 35. **उस्मानाबाद** : पं. विजयजी बोरालकर वाघजाली, 36. **अकोला** : पं. सुबोधजी सिंघई सिवनी, 37–38. **नागपुर (विधान)** : पं. कांतिकुमारजी जैन इन्दौर एवं पं. मनीषजी 'सिद्धान्त' खडैरी, 39.**जामनेर** : पं. दिलीपजी महाजन मालेगाँव, 40. **सोलापुर (कासार मन्दिर)** : पं. नंदकिशोरजी मांगूलकर काटोल, 41. **डासाला** : पं. चिंतामणजी भुस औरंगाबाद, 42. **सांगवी (पुणे) :** पं. रवीन्द्रजी मसलकर अम्बड, 43. **हिवरखेड** : पं. श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, 44. **अकलूज** : पं. जीवराजजी नासिक, 45. **पुणे (चिंचवड)** : पं. संदीपजी भिटोनी, 46.**मालेगाँव** : पं. रविन्द्रजी महाजन वसमत, 47. **सदाशिवनगर** : पं. अक्षयजी वाडकर, 48. **बेलोरा** : पं. सुनयजी माद्रप जालना, 49. **धामणगाँव बढे** : पं. संदेशजी बोरालकर, 50.**वरूड़ (बु.)** : पं. अजयजी गोरे हिंगोली, 51. **शिवपुर** : पं. अभिजीतजी अलगौंडर शेडबाल, 52. **हेरले** : पं. प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, 53. **साडवली** : पं. दीपकजी जैन बांसवाड़ा, 54. **कोल्हापुर** : पं. जिनचन्दजी आलमान हेरले, 55. **वसगडे** : पं. महेशजी नेजे दत्तवाड, 56. **तलदगे** : पं. श्रेणिकजी जैन बांसवाड़ा, 57. **ऐतवडे** : पं. सुकुमारजी जैन बांसवाड़ा, 58 **अष्टा** : पं. अमोलजी जैन बांसवाड़ा, 59. **मजले** : पं. सतीशजी जैन बांसवाड़ा, 60. **वालवा** : पं. उमेशजी घोसरवाडे अकिवाट, 61. **बागणी** : पं. मिलींदजी केटकाले कबनूर, 62. **मिणचे** : पं. सूरजजी पाचोरे नान्द्रे, 63. **घोसरवाड** :पं. रवीन्द्रजी आलमान हेरले, 64. **गणेशवाडी** : पं. संयमजी शेटे कोल्हापुर, 65. **बुर्ली :** पं. बालासाहेबजी चौगुले वलीवडी, **(शेष पृष्ठ–7 पर ...)**

हो सकता है महावीर जैन युवा संघ में ही आयें

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दिनांक 15 अप्रैल 2007 को रामलीला मैदान मलाड ईस्ट, मुम्बई में श्री जैन युवा संघ के मंच से दिया गया भाषण)

संतप्त मानस शांत हो जिनके गुणों के गान में।
वे वर्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।।

विश्व के दर्शनों में जैनदर्शन ही एक ऐसा दर्शन है, जो यह कहता है कि प्रत्येक आत्मा स्वयं भगवान है। स्वभाव से तो प्रत्येक आत्मा भगवान है ही, यदि वह स्वयं को जाने, स्वयं को पहिचाने और स्वयं में जम जाये और रम जाये तो पर्याय में प्रगट रूप से भगवान बन सकता है। दुनियाँ के अन्य सभी दर्शनों में परमात्मा अलग होते हैं और जीवात्मा अलग; लेकिन जैनदर्शन एक ऐसा दर्शन है कि जो यह कहता है कि प्रत्येक आत्मा वैसा ही परमात्मा है, जैसे अरहन्त और सिद्ध भगवान हैं। फर्क इतना ही है कि वे आज के भगवान हैं और हम कल के भगवान हैं।

मैंने भगवान महावीर की पूजन लिखी है, उसमें एक दोहा है ह्न

भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान।
वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान।।

आप भूतकाल में जैसे थे, आज हम वैसे हैं। आज आप जैसे हैं, हम भविष्य में वैसे बननेवाले हैं। हममें और आपमें कोई अन्तर नहीं है।

अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग मैं राग वितान ह्न वे वीतरागी हैं और मैंने राग की चादर ओढ़ रखी है। वह चादर फैंकी नहीं कि मैं भी भगवान बन जाऊँगा; क्योंकि **मम स्वरूप है सिद्ध समान** ह्न मेरा स्वरूप भी सिद्धों के समान है।

आत्मा से परमात्मा बनने की यह बात अकेले मनुष्यों तक सीमित नहीं है। भगवान महावीर ने भगवान बनने का काम दस भव पहले शेर की पर्याय में आरम्भ किया था और भगवान पार्श्वनाथ ने भगवान बनने का काम दस भव पहले हाथी की पर्याय में आरम्भ किया था। इससे सिद्ध होता है कि जैनदर्शन न केवल नर से नारायण बनानेवाला दर्शन है; अपितु पशु से परमेश्वर बनानेवाला दर्शन है।

शेर माँसाहारियों में सबसे ज्यादा ताकतवर जानवर है और हाथी शाकाहारियों में। शेर माँसाहारियों का राजा है और हाथी शाकाहारियों का। इससे यह बात स्पष्ट है कि भले ही वह माँसाहारी हो या शाकाहारी, यदि वह भगवान की शरण में आयेगा, उनके बताये हुए मार्ग पर चलेगा, अपने आत्मा को जानेगा–पहिचानेगा तो वह भी बिना किसी भेदभाव के भगवान बनने का पुरुषार्थ कर सकता है, भगवान बन सकता है। न सही उसी भव में, दो–चार भव के बाद ही सही, पर वह भगवान बनेगा अवश्य।

पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि कोई माँस खाते–खाते भगवान बन जायेगा। तात्पर्य मात्र इतना है कि आचार्यदेव ने समझाने के पहले कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया कि तुम यह करोगे, वह करोगे तो हम तुम्हें अपनी बात सुनायेंगे।

क्या आप यह नहीं जानते हैं कि भगवान महावीर दस भव पहिले शेर की पर्याय में थे और एक हिरण को मारकर खा रहे थे। हमारे मन्दिरों में ऐसे चित्र लगे हुए हैं, जिनमें यह दिखाया गया है कि एक अधमरा हिरण नीचे पड़ा है, उसके माँस का एक टुकड़ा शेर के हाथ में है और कुछ अंश पेट में भी चला गया है, कुछ मुँह में है और खून से शेर के हाथ रंग रहे हैं। इसी समय आकाश से चारणऋद्धिधारी मुनिराज आये और उन्होंने उस शेर को उपदेश दिया, आशीर्वाद दिया। शास्त्रों में लिखा है कि मुनिराजों के उपदेश और आशीर्वाद से उस शेर ने अपने आत्मा में उपयोग लगाया और उसी वक्त सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कर ली।

मेरे अनेक विद्यार्थी पर्यूषण पर्व में प्रवचन करने बाहर जाते हैं। उनकी शिकायत होती है कि साहब आपने हमें कहाँ भेज दिया, वहाँ 25 आदमी सभा में बैठे थे। तो मैं कहता हूँ कि तुम उस शेर की सभा को याद क्यों नहीं करते हो, जिसमें दो वक्ता थे और एक श्रोता। यदि वह सभा सार्थक थी तो तुम्हारी सभा भी सार्थक क्यों नहीं हो सकती ?

सत् को संख्या की आवश्यकता नहीं होती। तुम तो वीतरागभाव से वस्तु का स्वरूप समझाओ। यदि ऐसा किया तो समझ लो तुम्हारा श्रम सार्थक होगा; क्योंकि कोई न कोई पात्र जीव तुम्हारी बात को अवश्य समझेगा।

मुझे कभी–कभी विचार आता है कि यह भी कोई बात हुई ? उन मुनिराजों ने शेर से यह क्यों नहीं कहा कि पहले कुल्ला करके आओ, मुँह साफ करके आओ; फिर हम तुम्हें आत्मा की बात बतायेंगे, आत्मा समझायेंगे; पर हम ऐसी शर्तें लगाते हैं। मेरे से बहुत लोग कहते हैं कि मालूम है कि आप आत्मा और परमात्मा की ये आध्यात्मिक बातें किन लोगों को सुनाते हैं ? आपको कुछ पता नहीं है, पर हम जानते हैं कि ये लोग कौन है और कैसे हैं ?

मैंने कहा ह्न हमें जानना भी नहीं है। अरे भाई ! उस शेर की जो हालत थी, वह हालत तो हमारे श्रोताओं की नहीं है न ? यदि वे मुनिराज ये सोचते कि मैं ऐसे नालायक श्रोता को आत्मा की बात कैसे

समझाऊँ ? तो बोलो उसका क्या होता ? जरा विचार तो करो कि कैसी रही होगी वह सभा ? एक श्रोता और वह भी माँसाहारी जानवर और दो वक्ता। क्या उसने उनको आमन्त्रण देकर बुलाया था ? दोनों वक्ता बिना निमन्त्रण के आये और उन्होंने उसे उपदेश दिया, वह भी बिना किसी शर्त के।

अरे भाई ! तत्त्वज्ञान के उपदेश में भी शर्ते लगाना ह्न यह कोई अच्छी बात तो है नहीं। तत्त्वज्ञान की बात तो भरी सभा में सबको सुनाना चाहिए, समझाना चाहिए; जिसका काल पक गया होगा, उसकी समझ में ये सब बातें आयेंगी ही।

क्या भगवान समवशरण में बैठकर महिलाओं को, पुरुषों को, बच्चों को, देवों को, पशुओं को और यहाँ तक गणधर देव जैसे सन्तों को अलग–अलग समझाते होंगे ? वे सभी को एक साथ एक ही बात सुनाते हैं, तत्त्वज्ञान ही समझाते हैं, मुक्ति का मार्ग ही दिखाते हैं। सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र की प्राप्ति कैसे हो ह्न यही बताते हैं। यही कारण है कि उनके उपदेश को सुनकर अनेक लोग सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति कर लेते हैं, अनेक लोग मुनिदीक्षा लेते हैं, श्रावकों के व्रत ले लेते हैं। हमारी इस तत्त्वचर्चा से भी अनेक लोग लाभान्वित होते हैं।

आप हवाई जहाज से यात्रा करते हैं तो मशीनों से आपकी जाँच की जाती है कि आपके पास कोई घातक हथियार तो नहीं है; पर हमारे पास तो ऐसी कोई मशीन नहीं है, जिससे हम यह पहिचान सके कि कौन सदाचारी है और कौन दुराचारी ?

भले ही वह शेर उस समय माँस भक्षण कर रहा हो, तथापि जब उसे आत्मा की बात समझ में आई, तबसे उसने माँस नहीं खाया।

यह तो आप जानते ही होंगे कि एक माँसाहारी पशु का माँस खाना छोड़ना कितना दुस्तर कार्य है; क्योंकि घास खाने लायक तो उसके दाँत और आतें हैं नहीं और हलुआ–पुड़ी कोई उसे खिलायेगा नहीं; ऐसी स्थिति में उसे माँसभक्षण का त्याग जीवन का दाव लगाकर ही करना होगा और उसने ऐसा किया।

भले ही उसे सारे जीवन का उपवास करना पड़ा हो, तो भी उसने माँस को छुआ नहीं। चाहे महिना दो महिने ही जिया हो, पर समाधिपूर्वक मरकर स्वर्ग में गया।

हम तो कहते हैं कि भगवान के समवशरण में जो भी व्यक्ति आये, उनको और उनके अनुयायी ज्ञानी प्रवक्ताओं को जो भी सुने; वह जब वहाँ से जाये तो जैसा आया था, वैसा का वैसा ही वापिस न चला जाये; कुछ न कुछ प्राप्त करके जाये। हमारी कसौटी तो यह होनी चाहिए।

हम भगवान महावीर से प्रार्थना करते हैं कि **एक बार तो आना पड़ेगा; सोते हुए भारत को जगाना पड़ेगा।** अरे भाई ! वे तो मोक्ष में चले गये न ? यह तो आप जानते ही है कि जो मोक्ष में चले जाते हैं, वे लौटकर नहीं आते हैं।

मान लीजिए भगवान महावीर ने हमारी बात मान ली और कहा कि मैं आने के लिए तैयार हूँ, लेकिन मुझे यह बताओ कि मैं कहाँ आऊँ ? दिगम्बरों में आऊँ या श्वेताम्बरों में ? क्या आप सब मिलकर सर्वसम्मति से यह नक्की कर सकते हैं ?

मान लो श्वेताम्बर भाईयों ने कह दिया कि हे भगवन् ! आप दिगम्बरों में आ जाइये; क्योंकि वे हमारे बड़े भाई हैं। तत्काल दूसरा प्रश्न खड़ा हो जायेगा कि दिगम्बरों में कहाँ आऊँ, तेरापंथियों में या बीसपंथियों में ? इस स्थिति में भी क्या आप कोई सर्वसम्मत निर्णय ले सकते हैं ?

यदि यह निर्णय हो जाय कि तेरापंथियों में ही आ जावे तब भी बात तो बननेवाली नहीं है; क्योंकि सभी पंथों के अन्तर्गत भी न जाने कितने पंथ हो गये हैं और निरन्तर होते जा रहे हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसका कोई अन्त नहीं है।

अरे भाई ! हम भगवान महावीर जैसी उपलब्धि के लिए भी एकमत नहीं हो सकते। अरे भाई ! कम से कम हम सब एक साथ बैठना तो सीखें। एक साथ बैठे बिना तो संवाद ही सम्भव नहीं है।

आपको याद है भगवान महावीर का 2500 वाँ निर्वाण महोत्सव वर्ष था, सरकारी समिति की अध्यक्ष भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी थीं। उनकी भावना थी कि दिल्ली में एक ऐसा जुलूस निकलना चाहिए कि सारे विश्व में तहलका मच जावे।

वह जुलूस संभव नहीं हो सका; क्योंकि हम सब इस बात पर झगड़ पड़े कि रथ में जो मूर्ति विराजमान होगी, वह दिगम्बर होगी या श्वेताम्बर ? आखिर इन्दिराजी ने रास्ता निकाला कि रथ एक नहीं दो निकलेंगे; फिर भी हम इस बात पर सहमत न हो सके कि आगे कौनसा रथ रहेगा ?

इसीप्रकार की बात डाक टिकट पर महावीर के चित्र के सन्दर्भ में भी हुई। पर आज यहाँ युवा संघ ने सब को एक साथ बिठा दिया।

मुझे मेरे पुत्र परमात्मप्रकाश ने बताया कि अशोकभाई ऐसा चाहते हैं कि इस आयोजन में बिना किसी भेदभाव के सभी जैनियों को बुलाया जाय, तो मैंने कहा कि ऐसे आयोजन में मैं अवश्य जाऊँगा।

सभी सम्प्रदायों के नेताओं को एक साथ एक मंच पर बिठा देना कोई साधारण काम नहीं है। यह मेंढ़कों को तौलने जैसा काम है। तराजू पर एक को बिठाओ तो दूसरा उतर कर भाग जाता है, दूसरे को बिठाओ तो तीसरा उतर जाता है। कोई किसी के साथ बैठना ही नहीं चाहता है। अब ऐसा लगता है यदि भगवान महावीर को आना होगा तो युवा संघ में ही आना होगा, युवा संघ के मंच पर ही आना होगा; क्योंकि उनके सभी अनुयायी यहीं एक साथ बैठे मिलेंगे।

युवा संघ ने यह कमाल करके दिखा दिया है, आज यहाँ लगभग सभी ग्रुपों के बड़े–बड़े नेता उपस्थित हैं और सब प्रमोदभाव से एक साथ बैठे हैं। यह तो आप जानते ही है कि भगवान महावीर की धर्मसभा (समवशरण) में न केवल सभी मनुष्य और देवता एक साथ बैठते थे; अपितु जातिविरोधी पशु–पक्षी भी एक साथ ही बैठते थे।

भगवान महावीर की धर्मसभा को समवशरण कहते हैं और यह सभा ऐसी नहीं होती है कि मैं यहाँ बैठा हूँ और आप मेरे सामने बैठे हैं। समवशरण में बीच में भगवान विराजते हैं और चारों तरफ जनता बैठती है। उसमें अकेले मनुष्य नहीं होते हैं, उसमें देवी–देवता और यहाँ तक कि पशु–पक्षी भी होते हैं। साँप और नेवला, शेर और गाय एकसाथ बैठे होते हैं। पशु–पक्षियों के लिए एक ही कक्ष है, जबकि देवताओं और मनुष्यों के लिए अनेक हैं।

मुझे विचार आया कि यह तो अन्याय है कि शेर और गाय को एक साथ बिठा दिया। यदि शेर गाय को खा गया तो कौन जिम्मेदार होगा ? यदि शेर और गाय को, साँप और नेवले को एक साथ बिठाया जा सकता है तो आदमियों को अलग–अलग कक्ष क्यों रखे, इनको भी एक साथ बिठा देते। लेकिन जब गहराई से सोचा तो एक बात समझ में आई कि जातिविरोधी शेर और गाय एक साथ बैठ सकते हैं; लेकिन मनुष्यों में भाई–भाई भी एक साथ नहीं बैठ सकते; इसलिए इनकी अलग व्यवस्था की गई है।

गुजरात में सेठ लोग नवकारसी करते हैं। उसमें किसी भी व्यक्ति को व्यक्तिगत आमन्त्रण नहीं दिया जाता; अपितु घोषणा कराई जाती है कि जिनके मुख में णमोकार महामन्त्र है, जो प्रतिदिन णमोकार महामन्त्र का जाप करते हैं; वे सभी हमारे यहाँ भोजन के लिए आमन्त्रित हैं। उक्त घोषणा को सुनकर बिना किसी भेदभाव के सभी जैनी आ जाते हैं।

आज आपको एक पण्डित नवकारसी जैसा ही आमन्त्रण दे रहा है कि मैं आप सबको भगवान महावीर के तत्त्वज्ञान को सुनाने आया हूँ, जिनके मुख में णमोकार मन्त्र है, वे सभी आमन्त्रित हैं। क्या आप सब मेरा आमन्त्रण स्वीकार नहीं करेंगे ? लड्डू खाने का आमन्त्रण तो स्वीकार करते हो, पर वीतरागी तत्त्वज्ञान सुनने का नहीं ह्न यह कैसे हो सकता है ? हम एक साथ बैठकर लड्डू खा सकते हैं, व्यापार में साझीदार हो सकते हैं, बेटी–व्यवहार भी कर सकते हैं; पर वीतरागी तत्त्वज्ञान एक साथ बैठकर नहीं सुन सकते। यदि हमें ऑपरेशन कराना हो तो हम अच्छा डॉक्टर देखते हैं, जैन डॉक्टर नहीं; माल खरीदना हो तो वहाँ से खरीदते हैं, जहाँ अच्छा और सस्ता माल मिलता है; हिन्दु–मुसलमान नहीं देखते; पर जहाँ धर्म की बात हो तो पण्डित गुजराती ही चाहिए।

एक गुजराती भाई ने दूसरे गुजराती भाई से कहा ह्न

''यह पण्डित बोलता तो बहुत अच्छा है, बात भी सच्ची और अच्छी करता है; पर यह है कौन ?''

''यह जैन है, महावीर का अनुयायी है, सदाचारी है, सात्विक है।''

''यह सब तो ठीक है, पर है कौन ? अपना गुजराती ही है न ?''

'नहीं' कहने पर वह मुँह फेर लेता है। अरे भाई ! भगवान महावीर भी तो गुजराती नहीं थे, हिन्दी भाषी ही थे। तो क्या आप महावीर को भी नहीं सुनते ? यदि मैं गुजरात में पैदा नहीं हुआ तो इसमें मेरी क्या गलती है ? यदि आप भी महावीर की जन्मभूमि में पैदा हो जाते तो हिन्दीभाषी ही हो जाते। भगवान महावीर की दिव्यध्वनि भी 18 महाभाषाओं और 700 लघुभाषाओं में खिरती थी। क्या आप इस हिन्दी–गुजराती के चक्कर में मूल तत्त्वज्ञान को भी तिलाञ्जली दे दोगे ? जबतक हम इस भाषावाद, प्रान्तवाद या सम्प्रदायवाद से ऊपर नहीं उठेंगे, तबतक महावीर वाणी का लाभ हमें प्राप्त नहीं होगा।

आपने कभी यह भी सोचा है कि आप कैसे दिगम्बर है ? दिगम्बरों के घर में पैदा हो गये, इसलिए दिगम्बर हो गये; श्वेताम्बर कुल में पैदा हो जाते तो श्वेताम्बर हो जाते। तेरापंथी और बीसपंथी भी हम ऐसे ही बने हैं। हमने प्रान्त, भाषा, धर्म और पंथ को बुद्धिपूर्वक तो चुना नहीं है। यह तो हमारा परम भाग्य था कि हमें सहजभाव से यह सत्यधर्म प्राप्त हो गया है; महान तो वे हैं, जिन्होंने इसे बुद्धिपूर्वक स्वीकार किया है, पूरी तरह गहराई में जाकर जीवन की बाजी लगाकर स्वीकार किया है। **धर्म परम्परा नहीं, स्वपरीक्षित साधना है।** यदि हमने इस परमधर्म को कुल परम्परा के कारण स्वीकार किया है तो यह कुलधर्म बनकर रह जायेगा; जिनधर्म नहीं होगा, आत्मधर्म नहीं होगा। अत: हमें भी जिनधर्म को विवेकपूर्वक स्वीकार करना होगा।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी ने इस परमधर्म को समझ–बूझकर, जान की बाजी लगाकर, स्वीकार किया था। उन्होंने हमारे महानतम ग्रन्थाधिराज समयसार को पढ़कर यह निर्णय किया था कि सत्यपंथ निर्ग्रन्थ दिगम्बर ही महावीर का मार्ग है।

अरे भाई ! हमें तो पलक बिछाकर उनका स्वागत करना चाहिए था, सत्कार करना चाहिए था; पर हमने उनका बहिष्कार किया।

मुसलमान और ईसाई लोग तो लोगों को धमकाकर, लुभाकर, फुसलाकर अपने धर्म में लाते हैं और हम समयसार पर अपना जीवन निछावर करनेवालों को भी सच्चे दिल से नहीं अपना पा रहे हैं; यही कारण है कि हम निरन्तर टुकड़ों में विभाजित होते चले जा रहे हैं।

क्या हमारा यह जिनधर्म जन–जन का धर्म इसीप्रकार बनेगा ? हमें इस बात पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

हम से लोग कहते हैं कि आप तो कानजी स्वामी के पंथ में

सामिल हो गये हैं। उनसे मेरा कहना है कि हम स्वामीजी के पंथ में सामिल नहीं हुए हैं, अपितु स्वामीजी हमारे पंथ में सामिल हुए हैं।

हम तो जन्मजात मूल दिगम्बर तेरापंथी शुद्धाम्नायी हैं, हम उस कुल में पैदा हुए हैं, जिसमें उक्त पंथ पहले से ही था; पर स्वामीजी ने उक्त पंथ को समझ–बूझकर अपनाया है। हमें तो यह धर्म सहजभाव से ही प्राप्त हो गया है और उन्होंने इसे बुद्धिपूर्वक स्वीकार किया है।

इस पर लोग कहते हैं कि आप उन्हें नमस्कार क्यों करते हैं, उनके प्रति आपके हृदय में इतना आदरभाव क्यों है ?

यद्यपि समयसार हमारा है; तथापि हम उसके मर्म को नहीं जानते थे ? उन्होंने हमें हमारे समयसार का मर्म समझाया है; वे हमारे विद्यागुरु हैं; क्योंकि उन्होंने हमें अध्यात्मविद्या सिखाई है।

दूसरी बात यह भी तो है कि वे हमारी सात पीढ़ियों को नमस्कार करते हैं, उनके गीत गाते हैं; आचार्य कुन्दकुन्द, अमृतचन्द्र, जयसेन को सौ–सौ बार नमस्कार करते हैं; पण्डित बनारसीदास, महापण्डित टोडरमल, जयचन्द, दौलतराम आदि विद्वानों के गीत गाते थकते नहीं हैं; तो हम उन्हें नमस्कार क्यों न करें, उनके गीत क्यों न गायें ?

मैं युवा संघ के कार्यकर्त्ताओं से कहना चाहता हूँ कि आपने यह बहुत अच्छा कार्य किया है।

इस पर लोग कहते हैं हमारी परम्पराओं में बहुत अन्तर है, तत्त्वज्ञान में भी बहुत मतभेद हैं ह्न ऐसी स्थिति में एक कैसे हो सकते हैं, एक साथ कैसे बैठ सकते हैं ?

बड़ी ही विनम्रतापूर्वक उनसे मैं यह कहना चाहता हूँ कि परम्पराओं का अन्तर तो भारतवर्ष की विशेषता है और तात्विक मतभेद हमारी स्वाध्यायी प्रवृत्ति का परिणाम है। इनके रहते हुए भी हम सामाजिक स्तर पर एक हो सकते हैं, एक साथ ऊठ–बैठ सकते हैं और समाजहित के प्रसंगों में एक साथ खड़े हो सकते हैं। ऐसा होना चाहिए और यह युवा संघ ने कर दिखाया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कह दिया केसरिया ऋषभदेव का मन्दिर हमारा है; पर क्या ले पाये हम ? वहाँ हमारी क्या दुर्दशा हुई है ह्न यह बताने की जरूरत नहीं है। हो सकता है गिरनार भी अदालत से हमें मिल जाये; पर क्या होगा उससे ? उनके पाँच हजार लोग प्रतिदिन पर्वत पर जाते हैं और हम पाँच–दस भी नहीं जा पाते।

अरे ! हम एक प्रतिशत भी तो नहीं हैं और उनके भी हजार टुकड़े। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह तत्त्वचर्चा हम लोगों के लिए छोड़ दीजिए और आप सब आ जाइए एक मंच पर। ले आइए उन सभी को एक मंच पर, जिनके मुख में णमोकार महामन्त्र है, जो भगवान महावीर को मानते हैं, जिनकी अहिंसा और शाकाहार में आस्था है। अरे भाई ! इस युवा सम्मेलन को एकता सम्मेलन में परिणत कर दीजिए। ऐसे सम्मेलन प्रतिवर्ष होने चाहिए, गाँव–गाँव में होने चाहिए। किसी भी काम को सफल बनाने के लिए उसे निरन्तरता प्रदान करनी पड़ती है, इसके बिना कही गई बात आई–गई हो जाती है।

मैंने इस बारे बहुत कुछ सोचा है। मैंने एकता के पाँच सूत्र निकाले हैं; जिनकी चर्चा भी अनेक बार की है, प्रवचनों में बताये हैं और आवश्यकतानुसार उन्हें लिखा भी है। अभी उनकी चर्चा करना सम्भव नहीं है।

यदि एकता के लिए काम करना है तो मतभेद की बातें मत करो; क्योंकि मतभेद के बावजूद मित्रता हो सकती है। सिद्धान्तों की बात तो बहुत दूर, घर में फर्नीचर बनवाना है तो भी क्या दो सगे भाई एकमत हो पाते हैं, पति–पत्नी एकमत हो पाते हैं; फिर भी घर तो चलता ही है न, जिंदगी भी प्रेमपूर्वक कटती ही है न।

पति कहता है कश्मीर चलो, पर पत्नी कहती है कि मैं तो धार्मिक शिक्षण शिविर में जयपुर जाऊँगी। आखिर इसमें भी तो हम रास्ता निकालते ही हैं न, एक वर्ष कश्मीर घूम आते हैं और एक वर्ष जयपुर जाकर कुछ तत्त्वज्ञान की बातें सीख आते हैं। इसीप्रकार धार्मिक और सामाजिक मतभेदों में रास्ता निकाला जा सकता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में एक साथ रहने का रास्ता निकालना आता है, पर उसकी समझ में यह बात आनी चाहिए कि मिल–जुलकर एक साथ रहने के अलावा हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है। यदि हमें अपने धर्म की रक्षा करनी है, समाज को उन्नति के रास्ते पर ले जाना है तो उसका एकमात्र उपाय है ह्न एकता, एकता और एकता।

अरे भाई ! इसके लिए पहले हम एक साथ बैठना तो सीखे, समन्वय स्थापित करना तो सीखे। जब एक साथ बैठेंगे–उठेंगे नहीं तो फिर एकता कहाँ से आयेगी ? एकता के बिना संगठन और संगठन के बिना कार्यसिद्धि सम्भव नहीं है। शास्त्रों में लिखा है कि **''कलौ संघे शक्तिः** ह्न कलियुग में शक्ति संगठन में बसती है।''

यह कलियुग है, इसलिए संगठित होकर हमें अपनी आवाज बुलन्द करनी होगी। मेरी आवाज आपके हृदय तक अवश्य पहुँची होगी ह्न इस आशा और विश्वास के साथ और सबके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

8 से 15 सितम्बर, 07	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
16 से 26 सितम्बर, 07	मुम्बई	दशलक्षण पर्व
17 से 26 अक्टूबर, 07	जयपुर	शिक्षण–शिविर
7 से 11 नवम्बर, 07	देवलाली	दीपावली
21 से 26 नवम्बर, 07	अहमदाबाद	पंचकल्याणक–वस्त्रापुर
23 से 29 दिसम्बर, 07	उदयपुर	सिद्धचक्र विधान
30 दिस. से 6 जन.,08	चेन्नई	व्याख्यानमाला

(पृष्ठ–2 का शेष ...) 66. **इचलकरंजी** : पं. दिग्विजयजी आलमान हेरले, 67. **बोर्डी** : पं. अनिलजी आलमान हेरले, 68. **धामणी** : पं. भरतजी अलगौंडर बाहुबली, 69. **नांदणी** : पं. सनतजी खोत बांसवाड़ा, 70. **मोडनिंब** : पं. दीपकजी मजलेकर आलते, 71. **वाशिम (सेतवाल)** : पं.निलयजी शास्त्री बाँसवाड़ा, 72.**देवलगांवराजा** : पं.कमलेशजी शास्त्री बण्डा, 73.**औरंगाबाद (सिडको)**: पं.शीतलजी शेट्टी शिरोल, 74.**फालेगांव** : पं.पंकजजी सिंघइ.हिंगोली, 75.**मालशिरस** : पं.सतीशजीबोरालकर डोणगांव, 76.**अणदूर** : पं.अभिलाषजी शास्त्री कोटा, 77.**सावदा**: पं.महावीरजी मांगूलकर कारंजा, 78.**मुंबई (वसई)**: पं.किशोरजी धोंगड़े रहाटगांव, 79.**मुंबई (बोरीवली)**: पं.विवेकजीशास्त्री दलपतपुर, 80.**मुंबई (मलाड)** : पं.सचिनजी भरडा गढ़ी, 81.**कळंब**: पं.अचलजी शास्त्री खनियाधाना, 82.**लासूर्णे**: पं.शशांकजी शास्त्री सागर, 83.**धरणगांव**: पं.आदेशजी बोरालकर सेनगांव, 84.**वालचंदनगर**: पं.प्रतीकजी शास्त्री जबलपुर, 85.**वसमतनगर**: पं.प्रकाशजी उखलकर गोवर्धन, 86.**रिसोड़**: पं.महेन्द्रजी मिरकुटे आसेगांव, 87.**वर्धा (रामनगर)**: पं.गजेन्द्रजी शास्त्री भीण्डर, 88.**पुणे(स्वाध्याय भवन)** : पं.अमितजी शास्त्री गुना, 89.**सेनगांव**: पं. संजयजी साव खनियांधाना, 90.**पानकन्हेरगांव**: पं.जयेशजी रोकड़े, 91.**पुणे (चिंचवड़)**: पं.संदीपजी शास्त्री भिटोनी, 92.**कोल्हापुर**: पं. सत्येन्द्रजी जैन बीना, 93.**सोलापुर (बुवने मंदिर)** : पं.अभिषेकजी जोगी नासिक।

राजस्थान प्रान्तह्न 1.**कोटा (रामपुरा)** : डॉ. श्रेयांसजी सिंघई जयपुर, 2. **कोटा (इन्द्र विहार)** : पं. धनसिंहजी जैन पिड़ावा, 3.**बांसवाड़ा** : पं. राजकुमारजी जैन बांसवाडा, 4.**अलवर**:पं. मनोजजीजैन करेली, 5. **उदयपुर (के.न.)** : पं. क्रान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर, 6.**उदयपुर (मुमुक्षु म.)** : पं. गुलाबचन्दजी बीना, 7. **उदयपुर (मण्डी की नाल)** : पं. ऋषभजी ललितपुर, 8. **उदयपुर (सेक्टर 5)** :पं. खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, 9.**उदयपुर (से.3)** :डॉ.महावीरप्रसादजी जैन टोकर, 10.**उदयपुर (गायरीयावास)** : पं. रीतेशजी जैन डडूका 11. **भीण्डर** :पं. सन्मतिजी मोदी सागर, 12.**उदयपुर (से.11)** :पं. पीयूषजी शास्त्री 13. **बिजौलियाँ** : पं. कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, 14. **पिड़ावा** : पं. नन्हेलालजी जैन सागर, 15. **प्रतापगढ़ (भाईजी का मन्दिर)** : पं. अमितजी शास्त्री बांसवाडा, 16. **बारां** : पं. वीरेन्द्रजी जैन विराटनगर, 17. **देवली** : पं. शिखरचन्दजी शास्त्री निवाई, 18. **किशनगढ़** : पं. सन्तोषजी शास्त्री बकस्वाहा, 19. **वल्लभनगर** : पं. वीरचन्दजी लाडनूं, 20. **भीलवाड़ा** : डॉ. नेमचन्दजी जैन महावीरजी, 21.**चित्तौड़गढ़** : पं. विजयजी बडोदिया, 22. **बेंगू** : पं. संजयजी शास्त्री हरसौरा, 23. **बून्दी (मुमुक्षु मण्डल)** : पं. मोहनलालजी राठोड केशवरायपाटन, 24. **कुरावड़** : पं. वीरेन्द्रवीरजी फिरोजाबाद, 25. **सेमारी** : पं. मीठालालजी भगनोत उदयपुर, 26. **जयथल** : पं. मथुरालालजी इन्दौर, 27. **उदयपुर (गायरियावास–विधान)** : पं. रोहितजी शास्त्री बांसवाड़ा, 28. **लूणदा** : पं. धर्मचन्दजी जैन जयथल, 29. **सरदारशहर** : पं. संजीवजी शास्त्री खडैरी, 30.**थानागाजी (अलवर)** : पं. चैतन्यजी शास्त्री बांसवाड़ा, 31. **कुशलगढ़ (तेरापंथी)** : पं. संजयजी शास्त्री बडामलहरा, 32. **साकरोदा** : पं. राजेन्द्रजी चित्तौड़गढ़, 33. **प्रतापगढ (मुमुक्षु मण्डल) :** पं. राजुभाई कानपुर, 34.**झालरापाटन** : पं. चन्दूलालजी कुशलगढ़, 35.**टोकर**: पं.ऋषिराजजी जैन बरां, 36.**अलीगढ़** : पं.अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा, 37.**बीकानेर**: पं.अंकितजी शास्त्री कोलारस, 38.**झालानाजी का बराना**: पं.सी.बाबू शास्त्री नल्लूर, 39.**कूंण**: पं.प्रदीपजी शास्त्री पथरिया, 40.**डबोक**: पं.सोमिलजी शास्त्री खनियांधाना, 41.**लकड़वास**: पं.सुधीरजी शास्त्री अमरमऊ, 42.**पीसागंज** : पं.सुरेशजी काले राजुरा, 43.**जौलाना** : पं.आशीषजी शास्त्री चिनौआ, 43.**बड़ौदामेव**: पं.पद्मचंदजी जैन कोटा, 44.**कुशलगढ़ (शांतिनाथ मंदिर)**: पं.सौरभजी शास्त्री कर्रापुर, 45.**अजमेर (विधान)**: पं.विजयजी शास्त्री मोड़ी, 46.**बनियानी**: पं.अभिषेकजी शास्त्री ढिग्सर, 47.**लाम्बाखोह**: पं.राहुलजी शास्त्री दमोह, 48.**कानौड़** : पं.निलेशजी शास्त्री मुहारी, 49.**झालरापाटन**: पं.कपिलजी शास्त्री पिड़ावा, 50.**उदयपुर (से.5)**: पं.निशांतजी शास्त्री बाँसवाड़ा, 51.**इटावा (कोटा)**: पं.अनुरागजी शास्त्री भगवां।

उत्तरप्रदेश प्रान्तह्न 1. **रूड़की :** डॉ. मानमलजी कोटा, 2.**ललितपुर** : पं. रमेशचन्दजी'दाऊ' जयपुर, 3. **खतौली** : पं. मधुकरजी जैन जलगांव, 4. **मैनपुरी** : पं. नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 5. **गुरसराय** : पं. अभयजी बदरवास, 6. **अलीगढ़ (मंगलायतन)**: पं. देवेन्द्रजी बिजौलियाँ, 7. **मेरठ (तीरगरान)** : पं. मनोजजी जैन जबलपुर, 8. **सहारनपुर** : पं. ज्ञानचंदजी जैन ललितपुर, 9. **रानीपुर (झांसी)** : पं. सुदीपजी बीना, 10. **करहल** : पं. गोकुलचन्दजी सरोज ललितपुर, 11. **फिरोजाबाद (विधान)** : पं. महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, 12. **कुरावली** : पं. सुमितजी शास्त्री टीकमगढ, 13. **डांडा–इटावा** : पं. महेशचन्दजी भोपाल, 14.**मड़ावरा** : पं. नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा, 15.**ललितपुर** : कु. स्वाती जैन जयपुर, 16.**अमरोहा** : पं. विमलजी जलेसर, 17. **बिजनौर** : पं. अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ, 18.**कांधला :** पं.शीतलजी पाण्डे उज्जैन, 19. **गुढा** : पं. शिखरचन्दजी सिवनी, 20.**चिलकाना :** पं. अंकुरजी मंगलायतन, 21. **जैतपुरकलाँ :** पं. निर्मलजी एटा, 22. **गाजियाबाद :** पं. राजीवजी थानागाजी 23. **बडौत :** पं.सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, 24. **बानपुर :** पं. रमेशचन्दजी करहल, 25. **शिकोहाबाद :** ब्र. राकेशजी जैन बीना, 26. **कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पं. विवेकजी शास्त्री पिड़ावा, 27. **कुरावली :** पं. सुमितजी शास्त्री टीकमगढ, 28.**गंगेरू**: पं.विमोशजी शास्त्री खड़ैरी, 29.**एत्मादपुर**: पं.रमेयजी शास्त्री जिंजी, 30.**झाँसी**: पं.वीरचंदजी शास्त्री लाडनूं, 31.**रामपुर मनिहारन**: पं.कैलाशचंदजी शास्त्री मोमासर, 32.**कानपुर (किदवई.नगर)**: पं.नितेशजी शास्त्री आरोन, 33.**कैराना** : पं.अंकितजी शास्त्री लूणदा एवं संदीपजी पाटील कोल्हापुर।

गुजरात प्रान्त ह्न 1.**अहमदाबाद (पालडी) :** पं. अभयजी शास्त्री खैरागढ, 2.**अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं. राजेन्द्रजी जैन पिपरई, 3. **अहमदाबाद(वस्त्रापुर) :** पं०. नागेशजी जैन पिड़ावा, 4.**अहमदाबाद (ओढव) :** डॉ. महेशजी जैन भोपाल, 5.**अहमदाबाद (मणिनगर) :** पं. शिखरचन्दजी विदिशा, 6–7.**अहमदाबाद(ईशनपुर) :** पं. नवीनजी शास्त्री एवं पं. करणजी शाह बडोदरा, 8.**अहमदाबाद(आशीषनगर) :** पं. सतीशचन्दजी जैन पिपरई, 9. **अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पं. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 10.**हिम्मतनगर** : पं. दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर,11.**राजकोट :** पं. रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 12.**बडोदरा :**

पं. सुरेशजी जैन गुना,13.**तलोद :** पं. निर्मलजी जैन सागर,14.**दाहोद :** पं. चंदूभाईजी मेहताफतेपुर,15.**वापी :** पं. अभिनवजी मोदी मैनपुरी, 16.**रखियाल :** पं. जगदिशसिंहजी पवांर उज्जैन, 17.**मोरबी :** पं. धीरजजी शास्त्री जबेरा, 18.**जेतपुर :** पं. मांगीलालजी कुरावली, 19.**अहमदाबाद (वस्त्रापुर-विधान) :** पं. सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, 20.**पोरबन्दर :** पं. सौरभजी शास्त्री मौ, 21.**भावनगर**:डॉ. राकेशजी शास्त्री अलीगढ़।

अन्य प्रान्तह्न 1.**पोन्नूरधाम :** पं. रमेशचन्दजी जैन सोनगढ, 2. **दिल्ली (शाहदरा) :** पं. कस्तूरचन्दजी भोपाल (सिलवानीवाले), 3.**कोलकाता (खडगपुर) :** पं. कमलजी मलैया जबेरा, 4. **एर्नाकुलम् (कोचीन) :** पं. अनिलजी धवल कानपुर, 5.**बेलगाँव :** पं. अनन्तजी विश्वम्भर पुणे, 6.**हुबली :** पं. समकितजी शास्त्री सिलवानी, 7.**लुधियाना :** पं. निखिलजी शास्त्रीकोतमा, 8.**कोयम्बटूर :** पं. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, 9.**गन्नौरमण्डी :** पं. मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर, 10. **खेकड़ा :** पं. आशीषजी शास्त्री भिण्ड,11. **खेकड़ा (विधान) :** पं. सचिनजी मोदी खनियांधाना, 12.**हिसार :** पं. अंकितजी खनियांधाना, 13.**घटप्रभा :** पं. सुरेन्द्रजी पाटील मानकापुर, 14.**सरिया :** पं. सौरभजी शास्त्री शाहगढ,15.**बैंगलोर :** पं. राजकुमारजी जैन गुना, 16.**बेलगाँव (विधान) :** पं. वीरेन्द्रजी जैन बांसवाड़ा, 17.**रामगढ कैन्ट :** पं. रतनचन्दजी चौधरी कोटा, 18.**चिक्कोडी :** पं. मिथुनजीपुदाली शिरगुप्पी, 19.**मानकापुर :** पं. संतोषजी समन्नवर धारवाड, 20.**तेरदाल :** पं. प्रशांतजी हिरेमठ शेडबाल, 21.**शिमोगा :** पं. अनेकान्तजी शास्त्रीउगारबुद्रुक, 22.**उगार :** पं. भरतजी कोरी कागनरी, 23.**पुरुलिया :** पं. जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री उदयपुर, 24.**पेटरवार**: पं.धवलजी शास्त्री, 25.**कोलकाता (बाली)**: पं.पंकजजी शास्त्री जयपुर, 26.**कोलकाता (बेलदा)**: पं.राहुलजी शास्त्री बद्रवासश 27.**भागलपुर**: पं.सुदीपजी शास्त्री बरगी, 28.**आलंद**: पं. दिग्विजयजी आलमान, 29.**बेंगलोर**: पं.राजकुमारजी जैन गुना, 30.**बेलगांव (विधान)**: पं.वीरेन्द्रजी जैन बाँसवाड़ा।

दिल्ली के लगभग विभिन्न 40 उपनगरों मेंह्न 1.पं. प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद, 2.पं. विक्रान्तजी शाह सोलापुर, 3.पं. अविरलजी शास्त्री विदिशा, 4.पं. अमितजी शास्त्री लुकवासा, 5.पं. सुशीलजी शास्त्री फुटेराँ, 6.पं. सचिनजी शास्त्री बरेली, 7.पं. निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, 8.पं. सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, 9.पं. संदीपजी शास्त्री गोहद, 10.पं. संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, 11.पं. राकेशजी शास्त्री लोणी, 12.पं. स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, 13.पं. अमितजी शास्त्री फुटेराँ, 14.पं. अश्विनजी नानावटी नौगाँवा, 15.पं. जयकुमारजी जैन बांरा, 16.पं. आदित्यजी शास्त्री खुरई, 17.पं. मनोजजी शास्त्री खडैरी, 18.पं. गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, 19.पं. अंचलप्रकाशजी शास्त्री ललितपुर, 20.पं. पूरणचन्दजी जैन सोनागिरि, 21.पं. राजेन्द्रजी टीकमगढ, 22.पं. मनीषजी शास्त्री बरेली, 23.पं. शौर्यजी जैन मण्डाना, 24.पं. समकितजी जैन देवली, 25.पं. मंयकजी जैन गढी, 26.पं. वीरेन्द्रजी शास्त्री बरां, 27.पण्डित चैतन्यजी शास्त्री खडैरी, 28.पं. नितीनजी शास्त्री विदिशा, 29.पं. विमोशजी शास्त्री खडैरी, 30.पं. निकलंकजी शास्त्री कोटा, 31.पं. प्रयंकजी शास्त्री रहली, 32.पं. कस्तुरचन्दजी शास्त्री खडैरी, 33.पं. नीरजजी शास्त्री खडैरी, 34.पं. आशीषजी शास्त्री मौ, 35.पं. अभयजी शास्त्री खडैरी, 36.पं. अशोकजी मांगूलकर, 37.पं. श्रेंयासजी शास्त्री अभाना, 38.पं. जितेन्द्रजी शास्त्री खडैरी, 39.पं. सचिन्द्रजी शास्त्री गढाकोटा, 40.पं. पंकजजी शास्त्री बण्डा।

जयपुर के विभिन्न 26 उपनगरों मेंह्न 1. डॉ. नरेन्द्रजी जैन, 2.पं. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 3.पं. संतोषजी झांझरी, 4.पं. राजेशजी शास्त्री, 5. पं. विनयजी पापड़ीवाल, 6. डॉ. प्रभाकरजी सेठी, 7.पं. चिरंजीलालजी जैन, 8.पं. रमेशचन्दजी जैन, 9.पं. संजयजी शास्त्री, 10.पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री, 11. पं. दिनेशजी शास्त्री, 12. पं. मनीषजी कहान, 13. पं. गजेन्द्रजी शास्त्री, 14.पं. परेशजी शास्त्री, 15.पं. प्रभातजी शास्त्री, 16.पं. देवेन्द्रजी शास्त्री, 17.पं. अनन्तवीरजी जैन, 18.पं. विक्रान्तजी पाटनी, 19.विदुषी प्रेमलताजी जैन, 20.विदुषी प्रभाजी जैन, 21.पं. अनिलजी शास्त्री, 22.पं. पीयूषजी शास्त्री, 23. पं. अरहन्तवीरजी, 24. पं. रोहनजी रोटे, 25. पं.प्रशान्तजी उखलकर, 26. पं. संदीपजी शास्त्री के प्रवचन-कक्षा का लाभ मिलेगा।

नोट ह्न उपर्युक्त स्थानों के अतिरिक्त 90 स्थान ऐसे हैं, जहाँ स्थानीय विद्वान ही निश्चित किये गये हैं; अत: उनके नाम प्रकाशित नहीं किये हैं।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७